भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की लगभग बहत्तर प्रतिशत जनसंख्या गाँवो में निवास करती है। उनका प्रमूख व्यवसाय कृषि है। इस देश की कृषि पूर्णरूप से वर्षापर निर्भर है। हर वर्ष वर्षाऋतु में नभ में बादल घिर आते है और शीतल जलधारा से पृथ्वी की प्यास बुझाते है। इसलिए इस कल्पना से ही बहुत भय लगता है कि अगर नभ में बादल न होते, तब क्या होता

यदि नभ में बादल न होते, तो वर्षा रानी का आगमन रूक जाता। हमें वर्ष में आठ माह सुर्य की प्रखर किरणों का ताप सहन करना पडता। छोटे पेड, कोमल पौधे, हरी भरी लताएँ और मखमली घासें सूख जाती। कुओं का जलस्तर बहूत नीचे चला जाता, तालाब सूख जाते, खेती न हो पाती और वर्षा की प्रतीक्षा करते करते धरती की छाती में गहरी दारें दरारें पड जाती। ये सारी आशंकाएँ तब खरी निकलतीं, जब नभ में बादल न होते। किंतु हमें पूरा विश्वास है कि हर वर्ष नभमें बादल न होते। किंतु हमेंपूरा विश्वास है की हर वर्षनभ में बादल अवश्य घिरेंगें, वर्षारानी प्रसन्न होकर भारत भूमि पर वर्षा करती रहेंगी। इसे हरी भरी बनाए रखेंगी और हमें हर्षोल्लास से भरती रहेंगी।